पवित्र आत्मा की सेवकाई को समझना हर विश्वास करने वाले के लिए अत्यंत आवश्यक है। पवित्र आत्मा कोई निर्जीव शक्ति या केवल प्रभाव नहीं है—वह परमेश्वरत्व का तीसरा व्यक्ति है, पूर्णतः परमेश्वर, पिता और पुत्र के साथ समान और अनन्त। वह अपने लोगों के बीच और उनके भीतर परमेश्वर की जीवित उपस्थिति है।

संसार में पवित्र आत्मा के तीन मुख्य कार्यों को देखने से पहले, हमें यह समझना आवश्यक है कि परमेश्वर ने अपने आप को इतिहास में क्रमशः तीन प्रगटीकरणों के द्वारा प्रकट किया है:

पुराने नियम में, परमेश्वर ने ऊपर से पिता के रूप में बात की—भविष्यद्वक्ताओं, व्यवस्था और दिव्य प्रगटनों के द्वारा। (इब्रानियों 1:1)

देहधारण में, परमेश्वर स्वयं हमारे बीच यीशु मसीह के द्वारा आया—इम्मानुएल, अर्थात “परमेश्वर हमारे साथ,” देह में प्रकट हुआ।
(यूहन्ना 1:14; मत्ती 1:23)

नए नियम में, परमेश्वर अब हमारे भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा हम से बात करता है।
(यूहन्ना 14:17; रोमियों 8:9)

इन प्रत्येक चरणों ने मानवता को परमेश्वर के साथ पूर्ण संगति के और निकट पहुँचाया। अंतिम चरण—पवित्र आत्मा के द्वारा—सबसे अधिक निकट और सामर्थी है, क्योंकि अब परमेश्वर केवल हमारे साथ-साथ नहीं चलता, बल्कि हमारे हृदयों में वास करता है।

इब्रानियों 1:1–2

“बहुत समय पहले परमेश्वर ने कई बार और अनेक रीति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा हमारे पूर्वजों से बातें कीं,
पर इन अंतिम दिनों में उसने हम से अपने पुत्र के द्वारा
बातें की हैं…”

1 कुरिन्थियों 3:16

“क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?”

पवित्र आत्मा की भूमिका का भविष्यवाणी पुराने नियम में की गई थी
(यहेजकेल 36:26–27; योएल 2:28–29)
और यह पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई (प्रेरितों के काम 2), जब आत्मा की उंडेलाई के द्वारा कलीसिया का जन्म हुआ।

अब हम यीशु मसीह द्वारा बताए गए पवित्र आत्मा के तीन केंद्रीय कार्यों को देखें, जैसा कि यूहन्ना 16:8–11 में प्रकट किया गया है।

1. वह संसार को पाप के विषय में दोषी ठहराता है

यूहन्ना 16:8–9

“और जब वह आएगा, तो संसार को पाप, और धार्मिकता, और न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा: पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते।”

यहाँ “दोषी ठहराना” (यूनानी: elenchō) का अर्थ है—प्रकट करना, डाँटना, दोष को प्रकाश में लाना। पवित्र आत्मा पाप की वास्तविक प्रकृति को दिखाता है—केवल बुरे कामों के रूप में नहीं, बल्कि

परमेश्वर के पुत्र में अविश्वास के रूप में।

आदम की अवज्ञा के द्वारा पाप संसार में आया (रोमियों 5:12), पर नए नियम में सबसे बड़ा पाप यीशु मसीह को अस्वीकार करना है, जो एकमात्र उद्धारकर्ता है (यूहन्ना 3:18)। अविश्वास हृदय को कठोर कर देता है और मनुष्य को परमेश्वर के अनुग्रह से अलग कर देता है।

यूहन्ना 3:18

“जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दोष नहीं आता; पर जो
विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है, क्योंकि उसने
परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।”

सभी बाहरी पाप—व्यभिचार, चोरी, मूर्तिपूजा, टोना-टोटका, हत्या—भीतरी पाप के लक्षण हैं: विद्रोह और अविश्वास। पवित्र आत्मा पाप की जड़ को प्रकट करता है और हृदय को पश्चाताप और उद्धार देने वाले विश्वास की ओर ले जाता है।

पिन्तेकुस्त के दिन, जब पवित्र आत्मा उंडेला गया, पतरस ने मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने का प्रचार किया। सुनने वालों के हृदय “बेध दिए गए” (प्रेरितों के काम 2:37) और उन्होंने पूछा कि वे

क्या करें। उस दिन लगभग तीन हजार लोगों ने उद्धार पाया (प्रेरितों के काम 2:41)। यह पवित्र आत्मा द्वारा पाप के विषय में दोषी ठहराए जाने का प्रत्यक्ष परिणाम था।

इसके विपरीत, जब यीशु ने अपने सांसारिक सेवाकाल में वही संदेश दिए, तो बहुतों ने उसे अस्वीकार कर दिया (यूहन्ना 12:37–40), क्योंकि तब तक आत्मा लोगों के भीतर वास करने के लिए नहीं दिया गया था।

2. वह संसार को धार्मिकता के विषय में दोषी ठहराता है

यूहन्ना 16:10

“धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ
और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे।”

पवित्र आत्मा सच्ची धार्मिकता को प्रकट करता है—मानवीय प्रयासों या व्यवस्था की आत्म-धार्मिकता को नहीं
(यशायाह 64:6; फिलिप्पियों 3:9),
बल्कि उस धार्मिकता को जो केवल यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा गिनी जाती है।

2 कुरिन्थियों 5:21

“जिसने पाप को नहीं जाना, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।”

यीशु ने अपने सांसारिक सेवाकाल में विश्वास द्वारा धार्मिक ठहराए जाने की शिक्षा को पूरी तरह प्रकट नहीं किया था। उसके चेले भी समझते थे कि उद्धार केवल यहूदियों के लिए है (मत्ती 10:5–6)। यीशु ने बड़े उद्देश्य की ओर संकेत किया, पर वे उसे तब समझ नहीं सके।

यूहन्ना 16:12

“मुझे तुम से बहुत सी बातें और भी कहनी हैं, पर अभी तुम
उन्हें सह नहीं सकते।”

बाद में यह रहस्य पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट किया गया:

पतरस को—अशुद्ध पशुओं के दर्शन और कुरनेलियुस के परिवर्तन

के द्वारा (प्रेरितों के काम 10–11)

पौलुस को—अन्यजातियों के प्रेरित के रूप में, जिसने व्यवस्था के कामों के बिना, अनुग्रह से विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा दी
(रोमियों 3:21–28; गलतियों 2:16; इफिसियों 2:8–9)

इफिसियों 3:6

“यह रहस्य यह है कि अन्यजाति भी मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा सहवारिस, एक ही देह के अंग, और प्रतिज्ञा के सहभागी हैं।”

यह धार्मिकता कमाई नहीं जाती—इसे विश्वास के द्वारा ग्रहण किया जाता है। यह इसलिए संभव हुई क्योंकि मसीह पिता के पास गया और पवित्र आत्मा को भेजा, जो हमें सारी सच्चाई में ले चलता है (यूहन्ना 16:13)।

3. वह संसार को न्याय के विषय में दोषी ठहराता है

यूहन्ना 16:11

“न्याय के विषय में इसलिए कि इस संसार का सरदार दोषी ठहराया
जा चुका है।”

“इस संसार का सरदार” शैतान है
(यूहन्ना 12:31; इफिसियों 2:2)। क्रूस पर यीशु ने उसे पराजित किया और अन्धकार की सारी शक्तियों को निरस्त कर दिया (कुलुस्सियों 2:15)। उसका पुनरुत्थान शैतान की हार की मुहर था।

यूहन्ना 12:31

“अब इस संसार का न्याय होता है; अब इस संसार का सरदार बाहर निकाल दिया जाएगा।”

कुलुस्सियों 2:15

“उसने प्रधानताओं और अधिकारों को उनके हथियारों से वंचित
करके उन्हें खुलेआम दिखा दिया और क्रूस के द्वारा उन पर जय पाई।”

जब यीशु ने कहा,

“स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है” (मत्ती 28:18),
तो इसका अर्थ था कि शैतान का मनुष्य पर अधिकार समाप्त हो गया है।

पवित्र आत्मा गवाही देता है कि मसीह राज्य करता है और हर विश्वास करने वाला उसके विजय में सहभागी है
(रोमियों 16:20; प्रकाशितवाक्य 12:11)।

शैतान का न्याय हो चुका है, पर जो लोग मसीह को अस्वीकार करते हैं, वे उसके राज्य से अपने आप को जोड़ लेते हैं और उसके अनन्त दण्ड में सहभागी होंगे
(प्रकाशितवाक्य 20:10, 15)। पवित्र आत्मा संसार को चेतावनी देता है कि न्याय वास्तविक है, अंतिम है और पहले ही आरम्भ हो चुका है।

यहाँ तक कि प्रेरित यूहन्ना, जो कभी यीशु की छाती से लगा रहता था (यूहन्ना 13:23), जब उसने महिमा में मसीह को देखा, तो मरे हुए के समान गिर पड़ा (प्रकाशितवाक्य 1:17)। आत्मा के द्वारा उसने जी

उठे हुए राजा की सम्पूर्ण महिमा को समझा।

1 तीमुथियुस 6:15

“वह धन्य और एकमात्र अधिपति है, राजाओं का राजा और प्रभुओं
का प्रभु।”

पवित्र आत्मा आज भी गवाही देता है

ये तीन कार्य—पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराना—संसार के प्रति पवित्र आत्मा की पूर्ण गवाही हैं।

वह आज भी पवित्र शास्त्रों के द्वारा, प्रचार के द्वारा, आत्मा से भरे हुए विश्वासियों के द्वारा और अंतरात्मा की भीतरी गवाही के द्वारा बोलता है।

रोमियों 8:16

“आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम
परमेश्वर की सन्तान हैं।”

जो इस गवाही को ठुकराता है, वह परमेश्वर की सबसे स्पष्ट प्रकटता को अस्वीकार करता है। यीशु ने चेतावनी दी कि पवित्र आत्मा के कार्य का लगातार विरोध करना अनन्त दोष का कारण बनता है
(मत्ती 12:31–32)।

आपकी प्रतिक्रिया का अनन्त महत्व है

क्या आपने अपने हृदय में पवित्र आत्मा की गवाही को स्वीकार किया है?

क्या आपने यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और प्रभु मानकर विश्वास किया है, पापों से मन फिराया है और अपना जीवन उसे समर्पित किया है?

प्रेरितों के काम 2:38

“मन फिराओ, और तुम में से हर एक यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, ताकि तुम्हारे पाप क्षमा हों, और तुम पवित्र आत्मा का
दान पाओ।”

यूहन्ना 3:5

“यदि कोई जल और आत्मा से जन्म न ले, तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।”

बपतिस्मा पूरा डुबोकर दिया जाना चाहिए (यूहन्ना 3:23) और प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार यीशु मसीह के नाम में (प्रेरितों के काम 2:38; 8:16; 10:48)।

पवित्र आत्मा आपके भीतर वास करना चाहता है। वह आपके हृदय की उससे भी अधिक लालसा करता है, जितनी आप उसकी उपस्थिति की करते हैं (याकूब 4:5)। वह अभी आपको खींच रहा है।

आज आज्ञाकारिता चुनें।
यीशु पर विश्वास करें।
पाप से मन फिराएँ।
बपतिस्मा लें।
पवित्र आत्मा को ग्रहण करें।
उसकी आवाज़ को अपने जीवन को बदलने और आपको सारी सच्चाई में ले चलने दें।

पवित्र आत्मा की सेवकाई संसार के लिए परमेश्वर की अंतिम और

सबसे पूर्ण गवाही है। वह दोषी ठहराता है, सिखाता है, सामर्थ देता है, शान्ति देता है और मार्गदर्शन करता है। उसकी आवाज़ स्पष्ट है। उसका बुलावा तुरंत है।

इब्रानियों 3:15

“आज यदि तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने हृदय कठोर न करो…”

आज ही उसे ग्रहण करें—और परमेश्वर के अनुग्रह, धार्मिकता और अनन्त उद्देश्य की पूर्णता में चलें।

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर पिता का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ सदा बनी रहे। आमीन।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 13